# राजस्थान बोर्ड परीक्षा 2019–20
# 10वीं कक्षा
# सामाजिक विज्ञान
# मॉडल पेपर–10

**समय : $3\frac{1}{4}$ घंटे** **(पूर्णांक : 80)**

**परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देश :–**

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न–पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5.

| प्रश्न संख्या | अंक प्रत्येक प्रश्न | उत्तर की शब्द सीमा |
|---|---|---|
| 1–10 | 1 | 20 शब्द |
| 11–19 | 2 | 40 शब्द |
| 20–26 | 4 | 100 शब्द |
| 27, 29 | 6 | 150 शब्द |
| 28 | 7 | 150 शब्द |

6. प्रश्न संख्या 24 व 27 से 30 में आन्तरिक विकल्प हैं।
7. प्रश्न संख्या 30 मानचित्र कार्य से संबंधित है और 5 अंक का है।

## खण्ड–अ

**1.** सातवाहन वंश की नींव किसने व कब डाली? 1

**उत्तर :**
आन्ध्र (गोदावरी व कृष्णा नदी की घाटी) में सिमुक नामक व्यक्ति ने लगभग 60 ई.पू. में सातवाहन वंश की नींव डाली।

**2.** हल्दीघाटी का युद्ध कब हुआ और किसके बीच हुआ? 1

**उत्तर :**
18 जून, 1576 को हल्दीघाटी का युद्ध महाराणा प्रताप तथा मुगलों के बीच हुआ।

**3.** डायसी द्वारा लोकतन्त्र की परिभाषा लिखिए। 1

**उत्तर :**
डायसी के अनुसार **लोकतन्त्र वह शासन व्यवस्था है, जिसमें राष्ट्र का अधिकांश भाग शासक होता है।**

**4.** गेज प्रोजेक्ट परियोजना कब प्रारंभ की गई थी? 1

**उत्तर :**
भारतीय रेलवे द्वारा यूनि गेज प्रोजेक्ट परियोजना 1992 में प्रारम्भ की गई थी जिसके अन्तर्गत देश की सभी छोटी लाइनों को बड़ी लाईनों में परिवर्तित किया जाना है।

**5.** सर एम. विश्वेश्वरैया की पुस्तक का नाम बताइए। 1

**उत्तर :**
सर एम. विश्वेश्वरैया की पुस्तक का नाम **प्लान्ड इकॉनॉमी ऑफ इंडिया** है।

**6.** एनआईटीआई (नीति) आयोग के अध्यक्ष कौन हैं? 1

**उत्तर :**
भारत के प्रधानमंत्री एनआईटीआई (नीति) आयोग के अध्यक्ष हैं।

**7.** अर्थव्यवस्था के द्वितीयक क्षेत्र में कौनसी क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है? 1

**उत्तर :**

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

अर्थव्यवस्था के द्वितीयक क्षेत्र में विनिर्माण तथा निर्माण क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है।

**8.** मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए मौद्रिक उपाय किसके द्वारा लागू किये जाते हैं? 1

**उत्तर :**
मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए केन्द्रीय बैंक (आर.बी.आई.) द्वारा मौद्रिक उपाय लागू किये जाते हैं।

**9.** पहली बार सन् 1971 ई. में भारत में गरीबी के आकलन के लिए मानदंड/परिभाषा विकसित करने वाले दो अर्थशास्त्रियों के नाम बताइए। 1

**उत्तर :**
वी एम दाण्डेकर और नीलकंठ रथ ने पहली बार सन् 1971 ई. में गरीबी के आकलन के लिए एक मानदंड/परिभाषा विकसित की थी।

**10.** निर्धनता सूचकांक किसने तैयार किया था? 1

**उत्तर :**
संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के लिए ऑक्सफॉर्ड निर्धनता एवं मानव विकास पहल ने बहुआयामी निर्धनता सूचकांक बनाया।

**11.** राज्य उच्च न्यायालय का मूल क्षेत्राधिकार क्या है? 2

**उत्तर :**
मूल क्षेत्राधिकार से तात्पर्य है प्रथमतः उच्च न्यायालय द्वारा वादों की सुनवाई करना। ये क्षेत्र हैं–
संसद एवं राज्य विधानमण्डल सदस्यों के निर्वाचन सम्बन्धी विवाद, राजस्व एकत्रीकरण सम्बन्धी विवाद, मौलिक अधिकार व वसीयत, विवाह विधि, कम्पनी कानून तथा विवाह–विच्छेद आदि के मुकदमें।

**12.** माही बजाज सागर परियोजना का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। 2

**उत्तर :**
माही बजाज सागर परियोजना राजस्थान एवं गुजरात की संयुक्त परियोजना है। इसे विन्ध्याचल पर्वत से निकलने वाली माही नदी पर 1971 ई. में आरम्भ किया गया। यह परियोजना इस नदी के प्रवाह मार्ग में डूँगरपुर तथा बांसवाड़ा के आदिवासी क्षेत्रों के आर्थिक विकास हेतु सिंचाई तथा विद्युत सुविधाओं के विकास हेतु आरम्भ की गई। इस योजना में माही नदी पर राजस्थान के बाँसवाड़ा के निकट बोरखेड़ा नामक स्थान पर माही बजाज सागर (पक्का बाँध) तथा गुजरात में गुजरात सरकार की लागत से कड़ाना बाँध बनाया गया। नहर प्रणाली को विकसित करने के उद्देश्य से मुख्य बाँध से 500 मी. नीचे कागदी पिकअप बाँध बनाया गया और विद्युत तन्त्र के विकास हेतु मुख्य बाँध पर दो विद्युत गृहों का निर्माण किया गया।

**13.** भारत में कृषि विकास हेतु कोई तीन सुझाव दीजिए। 2

**उत्तर :**
भारत में कृषि विकास हेतु तीन सुझाव निम्नलिखित है–
1. भारत में सिंचाई सुविधाओं का विस्तार करना चाहिए ताकि मानसून पर निर्भरता में कमी आए।
2. कृषकों में गरीबी, अशिक्षा तथा ऋणग्रस्तता को दूर करना चाहिए।
3. हमें कृषि के प्राचीन स्वरूप व उत्पादन का जीवन निर्वाह प्रयोजन बदलना चाहिए। हमें कृषि को व्यावसायिक रूप देना चाहिए।

**14.** अभ्रक खनिजों की किस श्रेणी में आता है? यह राजस्थान में कहाँ मिलता है? 2

**उत्तर :**
अभ्रक अधात्विक खनिजों की श्रेणी में आता है। यह राजस्थान में भीलवाड़ा, जयपुर, टोंक, उदयपुर, अजमेर, अलवर व सीकर जिलों में मिलता है। अभ्रक उत्पादन एवं निवेश की दृष्टि से देश में राजस्थान का दूसरा स्थान है।

**15.** औद्योगिक प्रदूषण क्या है? 2

**उत्तर :**
ऐसी परिस्थितियाँ और घटनाएं जो औद्योगिक अपशिष्टों के कारण से मानव सभ्यता और प्रकृति के विनाश का कारण बनती हैं, उन्हें औद्योगिक प्रदूषण कहा जाता है। यह विशेषकर दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता जैसे उच्च शहरी क्षेत्रों में देखा जाता है, जिसमें उच्च स्तर के वायु और जल प्रदूषण शामिल हैं।

**16.** राजस्थान में जनसंख्या दर को स्थिर करने के लिए क्या प्रयास किए जा रहे हैं? 2

**उत्तर :**
राजस्थान में जनसंख्या दर को स्थिर करने के लिए निम्नलिखित प्रयास किए जा रहे हैं–
1. योग्य दम्पत्तियों को उनकी इच्छानुसार परिवार कल्याण की आवश्यक सेवायें उपलब्ध करवाकर परिवार सीमित करने हेतु शिक्षित किया जा रहा है।
2. नियमित टीकाकरण अभियान (मातृ शिशु स्वास्थ्य पोषण दिवस व मुख्यमंत्री पंचामृत अभियान) चलाकर गर्भावती महिलाओं एवं बच्चों को पोषण सेवाएं सुलभ करवाई जा रही है, ताकि शिशु एवं मातृ मृत्यु दर को कम किया जा सके।

**17.** आधारभूत संरचना का विभाजन कीजिए। 2

**उत्तर :**
आर्थिक विकास में आधारभूत संरचना की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। आधारभूत संरचना को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–
1. **आधारभूत ढाँचागत संरचना –** इसमें मुख्यतः परिवहन, बिजली, संचार प्रणाली को शामिल किया जाता है।
2. **आधारभूत सामाजिक संरचना –** इसमें मुख्य रूप से मानव संसाधन विकास को शामिल किया जाता है।

**18.** 1. सड़क दुर्घटना में मृत्यु होने पर दोषी पर कौनसी धारा लागू होती है?
2. क्या बाईं तरफ **यूटर्न** लिया जा सकता है? 2

**उत्तर :**
1. सड़क दुर्घटना में मृत्यु होने पर दोषी पर धारा 304 लागू होती है।
2. बाईं तरफ **यूटर्न** की अनुमति नहीं होती है।

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाऐंगे।

**19.** स्वच्छता प्रबंधन के दो मापदण्ड बताइये। 2

**उत्तर :**

स्वच्छता प्रबंधन के दो मापदण्ड निम्नलिखित है–

1. प्रतिष्ठान प्रबन्धक को प्रदूषण के स्त्रोतों से दूरी बनाकर रखनी चाहिए। प्रदूषण स्त्रातों में घरेलू जानवर, दूषित पानी, रासायनिक पदार्थ और अन्य प्रदूषक पदार्थ शामिल हैं।
2. प्रबन्धक को चाहिए कि गन्दी बदबू, हानिकारक गैसों, तेज गन्ध युक्त धुँआ और भाप की निकासी के लिए अच्छे रोशनदान या निकास यंत्र लगाएँ।

**20.** चंद्रगुप्त द्वितीय कौन था? उसकी मुख्य उपलब्धियों पर प्रकाश डालिए। 4

**उत्तर :**

चंद्रगुप्त विक्रमादित्य (चंद्रगुप्त द्वितीय), समुद्रगुप्त का पुत्र था। उसने 380 ई. से 412 ई. तक शासन किया। उसका नाम देवराज तथा देवगुप्त भी मिलता है। उसने अपने साम्राज्य को विवाह संबंधों और विजयों द्वारा बढ़ाया।

सबसे पहले उसने बंगाल पर अपनी विजय पताका फहराई। इसके पश्चात् वल्कीक जाति और अवंति गणराज्य पर विजय प्राप्त की। उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण सफलताएँ थीं– मालवा, काठियावाड़ और गुजरात। उज्जैन को उसने अपनी द्वितीय राजधानी बनाया। शकों को हराकर उसने विक्रमादित्य की पदवी धारण की। संस्कृत का महान विद्वान कालिदास उसी के दरबार में रहता था। उसके शासन काल में सुव्यवस्था थी। प्रजा सुखी और समृद्ध थी।

**21. हल्दीघाटी युद्ध का परिणाम महाराणा प्रताप के पक्ष में रहा।** कथन के पक्ष में प्रमाण दीजिए। 4

**उत्तर :**

मुगल बादशाह अकबर का उद्देश्य महाराणा प्रताप को जीवित पकड़कर मुगल दरबार में खड़ा करना अथवा मार देना था या फिर उनके सम्पूर्ण राज्य को अपने साम्राज्य में मिला लेना था। इस हेतु अकबर ने हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप के विरुद्ध युद्ध लड़ा लेकिन अकबर को अपने इन उद्देश्यों में सफलता प्राप्त नहीं हो पायी। हल्दीघाटी के युद्ध में मुगल सेना को विजय प्रमाणित नहीं होती है क्योंकि अकबर की मानसिंह व आसफ खाँ के प्रति गहरी नाराजगी थी जिसके कारण उनके मुगल दरबार में प्रवेश पर पाबन्दी लगा दी गई। इसके अतिरिक्त मुगल सेना का मेवाड़ में भयग्रस्त होकर समय निकालना तथा मेवाड़ की सेना का पीछा न करना जैसे प्रमाण है, जो हल्दीघाटी के युद्ध के परिणामों को महाराणा प्रताप के पक्ष में लाकर खड़ा कर देते हैं।

फरवरी 1577 ई. में स्वयं अकबर तथा अक्टूबर 1577 ई. से लेकर नवम्बर, 1579 तक शाहबाज खान का तीन बार लगातार मेवाड़ अभियान करना अकबर द्वारा अपना उद्देश्य पूरा करने के प्रयास थे, वे भी असफल रहे। महाराणा प्रताप का कोल्यारी गाँव कमलनाथ पर्वत के निकट **आवरगढ़** में अपनी अस्थायी राजधानी स्थापित करना एक विजेता का होना सिद्ध करता है। ये समस्त बातें महाराणा प्रताप की हल्दीघाटी के युद्ध में विजय को प्रमाणित करती है।

**22. गेस्टाइन समझौता आस्ट्रिया की राजनीतिक भूल और बिस्मार्क की बड़ी कूटनीतिक विजय थी।** व्याख्या कीजिये। 4

**उत्तर :**

गेस्टाइन समझौता ऑस्ट्रिया की राजनीतिक भूल और बिस्मार्क की एक महान कूटनीतिज्ञ विजय थी। इस समझौते के द्वारा बिस्मार्क को आस्ट्रिया के साथ युद्ध करने का भी मौका मिल गया। यद्यपि आस्ट्रिया को हालस्टाइन की डची मिली, लेकिन हालस्टाइन की जनता जर्मन जनता थी तथा वह प्रशा की सीमा से सटी हुई थी। वह आस्ट्रिया के दक्षिण में दूरस्थ स्थित थी। इस प्रकार वहाँ आस्ट्रिया के विरुद्ध असन्तोष फैलाने तथा उपद्रव करवाने का अच्छा अवसर था। वास्तव में बिस्मार्क ने इस समझौते के द्वारा आस्ट्रिया के साथ युद्ध करने का अवसर प्राप्त कर लिया।

**23.** नैतिक लोकतन्त्र को समझाइए। 4

**उत्तर :**

आधुनिक लोकतंत्र के विभिन्न रूपों में नैतिक लोकतंत्र को एक ऐसा रूप माना जाता है जो लोकतंत्र को जीवन के नैतिक और बौद्धिक रूप में दर्शाता है। कुछ विद्वानों ने लोतंत्र को एक नैतिक व आध्यात्मिक जीवन–दर्शन के रूप में स्वीकार किया है। लोकतन्त्र के प्रति इस नैतिक दृष्टिकोण को ही नैतिक लोकतन्त्र कहा जाता है। नैतिक लोकतन्त्र समस्त लोकतान्त्रिक दर्शन का व्यावहारिक रूप है, जिसमें मानव–मूल्यों को ही समाज व शासन का मूल आधार माना जाता है। इस रूप में नैतिक लोकतन्त्र की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति सन् 1789 की फ्रांस की उदार लोकतन्त्रवादी क्रांति **स्वतन्त्रता, समानता व भाई–चारे** के नारे के रूप में हुयी थी। इन तीनों में **भाई–चारे** (बन्धुत्व) का विशेष महत्त्व है, क्योंकि इसके बिना व्यक्तियों में समानता नहीं हो सकती है और समानता नहीं होगी, तो स्वतन्त्रता भी नहीं पायी जा सकती है।

**24.** कौशल विकास पर टिप्पणी लिखिए। 4

**उत्तर :**

कौशल से श्रम की उत्पादकता में वृद्धि होती है। किसी कार्य को अधिक अच्छे तरीके से सम्पन्न करने की योग्यता और क्षमता को कौशल कहा जाता है। कौशल विकास के द्वारा श्रम शक्ति को अधिक उत्पादक बनाया जा सकता है। यह माना गया है कि कौशल की उपलब्धता, श्रम के लाभ उत्पादन तथा कल्याण का मूल्यवान निर्धारक है। वर्तमान में भारत की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या कार्यकारी आयु वर्ग (15 वर्ष से 64 वर्ष) में शामिल हैं। जब जनसंख्या उत्पादक होती है तो वह देश के लिए हितकारी होती है, अन्यथा वह अहितकारी होती है। कौशल विकास से व्यक्ति की योग्यता उत्पादकता एवं जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि होती है तथा वह राष्ट्र की आर्थिक वृद्धि में अधिक योगदान दे पाता है।

**अथवा**

**24.** सन् 1990 ई. से भारत में प्रस्तुत किए गए विभिन्न आर्थिक सुधारों की व्याख्या कीजिए। 4

**उत्तर :**

सन् 1985 ई. में प्रस्तुत किए गए आर्थिक सुधारों को सन् 1990 ई. में तीव्र कर दिया गया था। नई आर्थिक नीति की तीन प्रमुख रणनीतियाँ थी–

1. **उदारीकरण –** उदारीकरण का मुख्य उद्देश्य अत्यधिक विनियामक

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

ढांचे और नौकरशाही नियंत्रणों को तोड़ना था जो उद्यम की आजादी पर झुकाव के रूप में कार्य करते थे। सन् 1991 ई. की औद्योगिक नीति में वित्तीय क्षेत्र, विदेशी व्यापार, विदेशी मुद्रा, कराधान इत्यादि पर लगाए गए अनावश्यक नियम वापस ले लिए गए थे।

2. **निजीकरण –** राज्य के स्वामित्व वाले उपक्रम के संचालन के स्वामित्व में निजी क्षेत्र को शामिल करने की प्रक्रिया में निजीकरण करना। रणनीतिक उद्योगों को छोड़कर जो देश की रक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण थे, अन्य उद्योगों में निजी भागीदारी की अनुमति प्रदान कर दी गई थी।
3. **वैश्वीकरण –** वैश्वीकरण का उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करना है। विदेशी निवेश के लिए घरेलू क्षेत्र खोला गया था। आयात प्रतिबंध हटा दिए गए थे और विदेशी निवेश को प्रोत्साहित किया गया था। नीति में व्यापार, पूँजी, प्रौद्योगिकी और श्रम का निर्बाध प्रवाह शामिल था।

**25.** साख किसे कहते हैं? 4

**उत्तर :**

**साख** शब्द से तात्पर्य एक पक्ष द्वारा दूसरे पक्ष को ऋण या उधार प्रदान करने से है। अर्थशास्त्र में साख शब्द का उपयोग ऋण के वित्तीयन (ऋण के लिए वित्त उपलब्ध करवाने) हेतु लिया जाता है। जिस प्रकार विनिमय में एक पक्ष वस्तु क्रय करता है, तो दूसरा पक्ष विक्रय करता है। क्रय तथा विक्रय एक ही सौदे के दो पक्ष हैं। इसी प्रकार वित्त या कोषों के लेन-देन में एक पक्ष उधार या ऋण प्राप्त करता है तो दूसरा पक्ष साख (उधार या ऋण) प्रदान करता है। इस प्रकार वित्तीय लेन-देन में जितनी राशि ऋण की प्राप्त होगी, उतनी ही राशि प्रदत्त साख की होगी।

**26.** राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के चार प्रमुख कार्य लिखिये। 4

**उत्तर :**

राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के चार कार्य निम्नलिखित है-

1. राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण का यह कार्य है कि वह केन्द्रीय सरकार की नीतियों एवं उसके द्वारा दिए निर्देशों को क्रियान्वित करें।
2. राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लोक अदालतों का जिसके अन्तर्गत न्यायालय के मामलों के लिए लोक अदालतें भी हैं, संचालन करने का कार्य करता है।
3. यह ऐसे व्यक्तियों को विधिक सेवा देता है जो इस अधिनियम के अधीन मापदण्डों की पूर्ति करते हैं।
4. ऐसे कार्यों का पालन करना जो केन्द्रिय प्राधिकरण द्वारा निर्देशित किये जाये।

**27.** इण्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना एवं उद्देश्यों को बताइये। 6

**उत्तर :**

1885 ई. में इण्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना एक अंग्रेज भारतीय सिविल सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी एलेन ओक्टेवियन ह्यूम ने की। इसकी स्थापना के पीछे ब्रिटिश सरकार की यह सोच थी कि एक ऐसा संगठन बनाया जाए जिससे भारतीयों के मन में क्या है, इसकी जानकारी ब्रिटिश सरकार को मिलती रहे तथा इसके सम्मेलनों में राजनैतिक नेताओं के मन की भड़ास निकल जायेगी तथा उन्हें अंग्रेजी शासन को हटाने के सशक्त प्रयास करने से भी रोका जा सकेगा। 28 दिसम्बर, 1885 को व्योमेश चन्द्र बनर्जी की अध्यक्षता में बम्बई के गोकुल दास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में प्रथम अधिवेशन प्रारम्भ हुआ जिसमें 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इण्डियन नेशनल कांग्रेस के निम्नलिखित चार उद्देश्य थे-

1. ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति पूरी निष्ठा तथा भक्ति रखते हुए इंग्लैण्ड की संसद द्वारा तय किये गए सिद्धान्तों के विरुद्ध किये जाने वाले भारत सरकार के कार्यों का विरोध करना।
2. राष्ट्र की उन्नति के लिए प्रयत्न में लगे लोगों को आपस में परिचित होने का अवसर देना।
3. आने वाले वर्षों के कार्यक्रम पर विचार करना।
4. अप्रत्यक्ष रूप से यह संगठन भारतीय संसद का रूप ग्रहण करेगा तथा इस बात का उचित उत्तर देगा कि अंग्रेजों की यह सोच कि भारत के चुने हुए प्रतिनिधि शासन-व्यवस्था करने की योग्यता नहीं रखते हैं।

**अथवा**

**27. 1857 का स्वतन्त्रता संघर्ष भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम था।** स्पष्ट कीजिये। 6

**उत्तर :**

1857 का स्वतन्त्रता संघर्ष भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम था। अधिकांश भारतीय इतिहासकारों के मतानुसार 1857 का विद्रोह भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम था। **सुरेन्द्रनाथ सेन** ने लिखा है कि यह युद्ध धर्म के नाम पर प्रारम्भ हुआ और स्वतन्त्रता संग्राम में जाकर समाप्त हुआ। राष्ट्रावादी **विनायक दामोदर सावरकर** ने अपनी पुस्तक **भारत का स्वातन्त्र्य समर** (वार ऑफ इण्डियन इण्डिपेन्डेस) में 1857 की क्रांति का पुरजोर समर्थन किया व इसे भारत का पहला स्वतन्त्रता-संग्राम बताया।

1857 के स्वतन्त्रता संघर्ष को भारत का प्रथम स्वतन्त्रता-युद्ध कहे जाने के आधार-

1. 1857 के विद्रोह का उद्देश्य ब्रिटिश शासन को जड़ से उखाड़ फेंकना था।
2. यह पहला संघर्ष था जिसमें हिन्दू और मुसलमान बिना किसी साम्प्रदायिक भावना के सम्मिलित हुए थे।
3. 1857 के विद्रोह में समाज के सभी प्रमुख वर्गों जमींदारों, किसानों, राजाओं, सैनिकों व आम जनता ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। पहली बार ब्रिटिश शासन के विरूद्ध लोगों का आक्रोश उमड़ कर सामने आया।
4. अनेक स्थानों पर जनता ने ही सैनिकों को विद्रोह के लिए प्रोत्साहित किया।
5. मुगल सम्राट बहादुरशाह ने भारतीयों से अपील करते हुए कहा था कि **यह मेरी हार्दिक इच्छा है कि किसी भी प्रकार अंग्रेजों को भारत के बाहर निकाल दिया जाये तथा भारत को उनसे स्वतंत्र किया जाये।**

**28.** 1. भारत के सुप्रीम कोर्ट के सलाहकार क्षेत्राधिकार क्या हैं?
2. कोलेजीयम क्या है? 7

**उत्तर :**

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाऐंगे।

1. अनुच्छेद 143 में यह व्यवस्था दी गई है कि यदि राष्ट्रपति यह आवश्यक समझता है कि कोई संवैधानिक या सामाजिक महत्त्व का प्रश्न ऐसा है कि जिस पर उच्चतम न्यायालय की सलाह या परामर्श आवश्यक है, तो वह (राष्ट्रपति) न्यायालय को सम्बन्धित प्रश्न पर अपनी राय देने के लिए कह सकता है, किन्तु इस प्रकार दी गई किसी राय को राष्ट्रपति मानने या न मानने के लिए बाध्य नहीं होगा। आज तक राष्ट्रपति ने इस तरह लगभग दस बार उच्चतम न्यायालय से परामर्श माँगा है। इनमें से मुख्य हैं– केरल शिक्षा विधेयक (1958), राष्ट्रपति के निर्वाचन से सम्बन्धित मामला (1974), विशेष अदालत विधेयक (1978), कावेरी जल विवाद (1991), अयोध्या में स्थित राम जन्मभूमि–बाबरी मस्जिद विवाद (1993–94)।
2. **कोलेजीयम –**
   (a) यह प्रणाली सुप्रीम कोर्ट और उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्ति की व्यवस्था प्रदान करती है।
   (b) कॉलेजियम द्वारा दिए गए न्यायाधीशों की नियुक्ति के लिए सलाह जिसमें सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता में पाँच वरिष्ठ न्यायाधीश शामिल होते हैं, प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति को भेजी जाती है।
   (c) जो सलाह दी गई है या तो उस पर राष्ट्रपति द्वारा सहमति दी गई है या पुनःस्थापन के लिए उसके द्वारा भेजा गया है। यदि कॉलेजियम फिर से नियुक्ति करने के लिए भेजता है, तो राष्ट्रपति अपनी राय देता है।

**अथवा**

**28.** राष्ट्रीय आपातकाल के प्रावधानों की व्याख्या कीजिए। 7

**उत्तर :**

राष्ट्रीय आपातकाल के प्रावधान निम्न है–

1. राष्ट्रपति को कुछ आपातकालीन शक्तियों का अधिकार प्राप्त है जिसके माध्यम से वह केन्द्र व राज्य संबंधों को बदल सकते हैं और राज्यों को केन्द्र में उप सहयोगी होने का निर्देश दे सकते हैं।
2. अनुच्छेद 352 के अनुसार राष्ट्रपति युद्ध, बाह्य आक्रमण या सशस्त्र विद्रोह से भारत या उसके किसी भाग की सुरक्षा संकट में होने के आधार पर **आपात की उद्घोषणा** कर सकता है। इस घोषणा की अवधि 1 माह होती है। संसद के दोनों सदनों द्वारा अनुमोदित किए जाने से घोषणा 6 माह तक चल सकती है।
3. आपातकाल की इस तरह की घोषणा संसद के दोनों सदनों द्वारा अनुमोदन के अधीन होती है। यदि लोकसभा भंग हो जाती है तो राज्यसभा को एक महीने के भीतर मंजूरी देनी होगी। नई लोकसभा का गठन होने के बाद इसे 30 दिनों के भीतर मंजूरी देनी होगी। पहले आन्तरिक उपद्रव की वजह से भी आपातकाल लगाया जा सकता था, लेकिन 44वें संशोधन अधिनियम, 1978 द्वारा **आन्तरिक अशान्ति** के स्थान पर **सशस्त्र विद्रोह** शब्द रख दिया गया है।
4. 44वें संशोधन अधिनियम, 1978 के अनुसार लोकसभा में साधारण बहुमत से राष्ट्रीय आपातकाल को रद्द करने की विशेष शक्ति है।
5. राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान केन्द्र सरकार राज्य सरकारों को निर्देश देती है, जिसका (उत्तरार्द्ध) राज्य सरकारों को पालन करना चाहिए; राज्य सूची के विषयों पर कानून बना सकते हैं।
6. एक राष्ट्रपति केन्द्र और राज्यों के बीच वित्तीय संबंधों में बदलाव कर सकता है।
7. आर्टिकल 19 के तहत मौलिक अधिकार अस्थायी रूप से निलंबित किया जा सकता है।

**29.** राज्य मंत्रीपरिषद और विधानमण्डल के मध्य सम्बन्धों की विवेचना कीजिये। 6

**उत्तर :**

**राज्य मंत्रीपरिषद और विधानमण्डल के मध्य सम्बन्ध–** भारत में संसदात्मक शासन व्यवस्था अपनायी गयी है। इसलिए मंत्रीपरिषद का निर्माण विधानमण्डल के सदस्यों में से ही किया जाता है। मंत्रीपरिषद के प्रत्येक सदस्य के लिए राज्य विधानमण्डल के किसी एक सदन का सदस्य होना आवश्यक है। यदि मंत्रीपद ग्रहण करते समय वह विधानमण्डल का सदस्य नहीं है तो उसे 6 महीने के अन्दर विधानमण्डल का सदस्य बनना आवश्यक है, अन्यथा उसे मंत्रीपद से त्यागपत्र देना होगा।

**मंत्रीपरिषद विधानसभा के प्रति उत्तरदायी है–** मंत्रीपरिषद उसी समय तक अपने पद पर रह सकती है जब तक कि उसे विधानसभा का विश्वास प्राप्त है।

**सैद्धान्तिक दृष्टि से विधानसभा द्वारा मंत्रीपरिषद पर नियंत्रण–** विधानसभा द्वारा मंत्रीपरिषद पर अनेक साधनों से नियंत्रण रखा जा सकता है। ये हैं–

1. **प्रश्न पूछकर –** विधानसभा और विधानपरिषद् के सदस्यों को अधिकार है कि वे अधिवेशन के दिनों में मंत्रीपरिषद के सदस्यों से विभिन्न प्रशासनिक बातों के सम्बन्ध में प्रश्न पूछें।
2. **काम रोको प्रस्ताव द्वारा –** काम रोको प्रस्ताव विधानमण्डल द्वारा शासन पर नियन्त्रण का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। यदि प्रशासन के किसी भी क्षेत्र में कोई गम्भीर घटना घटित हो जाती है तो विधानमण्डल के प्रत्येक सदस्य को अधिकार है कि वह अपने सदन में इस आशय का प्रस्ताव रखे कि पहले से चले आ रहे सभी विषयों पर विचार स्थगित कर इस गम्भीर घटना पर विचार किया जाये।
3. **विधेयक को अस्वीकृत करके –** विधानमण्डल को अधिकार है कि वह मंत्रीमण्डल के सदस्य द्वारा प्रस्तावित किसी विधेयक या नीति को अस्वीकार कर दे। यदि यह अस्वीकृति विधानसभा की ओर से होती है तो मंत्रीपरिषद् को त्यागपत्र देना होता है।
4. **बजट पर कटौती –** मंत्रीमण्डल विधानमण्डल की स्वीकृति के बिना आय–व्यय से सम्बन्धित कोई कार्य नहीं कर सकता। विधानसभा द्वारा बजट में कटौती से मंत्रीमण्डल को त्यागपत्र देना होता है।
5. **अविश्वास प्रस्ताव –** विधानसभा के द्वारा अविश्वास का प्रस्ताव पास कर मंत्रिपरिषद् को पदच्युत किया जा सकता है।

इस प्रकार सैद्धान्तिक दृष्टि से विधानसभा मंत्रीपरिषद के कार्यों पर नियंत्रण रखती है और उसे पदच्युत कर सकती है।

**व्यवहार में मंत्रिमण्डल द्वारा विधानसभा पर नियंत्रण–** व्यवहार में मंत्रिमण्डल विधानसभा पर निम्न आधारों पर नियंत्रण रखता है–

1. **दलीय नियंत्रण –** मुख्यमंत्री विधानसभा के बहुमत दल का नेता होने के आधार पर विधानसभा पर नियंत्रण करता है क्योंकि विधानसभा के बहुमत दल के सदस्य दलीय अनुशासन के कारण

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

मंत्रीपरिषद का समर्थन करने को बाध्य देते हैं।

2. **कानून निर्माण के क्षेत्र में नेतृत्व** – कानून निर्माण के क्षेत्र में भी विधानसभा में नेतृत्व मंत्रीमण्डल के द्वारा किया जाता है।
3. **वित्तीय क्षेत्र में नियंत्रण** – वित्त मंत्री विधानसभा में बजट प्रस्तुत करता है जो दलीय बहुमत के आधार पर पारित करा लिया जाता है।
4. **मुख्यमंत्री की विधानसभा भंग करने की शक्ति** – विधानसभा पर मंत्रीमण्डल के नियंत्रण का एक अन्य महत्त्वपूर्ण साधन–विधानसभा को भंग करने की मुख्यमंत्री की शक्ति है।

अतः स्पष्ट है कि व्यवहार में मंत्रीपरिषद विधानसभा को नियंत्रित करती है।

**अथवा**

**29.** भारतीय न्यायपालिका को स्वतंत्र बनाने के लिए भारत में क्या कदम उठाए गए हैं? 6

**उत्तर :**

न्यायपालिका की स्वतन्त्रता का आशय है कि न्यायपालिका, व्यवस्थापिका एवं कार्यपालिका के किसी भी प्रकार के दबाव के बिना स्वतन्त्रतापूर्वक एवं निष्पक्षतापूर्वक अपना कार्य कर सके।

भारत में एक एकीकृत, निष्पक्ष और स्वतंत्र न्यायिक प्रणाली है। इसे स्वतंत्र बनाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं–

1. **कार्यपालिका के नियन्त्रण से मुक्त** – न्यायपालिका को कार्यपालिका से पृथक् रखा गया है। इसके लिए न्यायाधीशों की नियुक्ति का अधिकार राष्ट्रपति को दिया गया है लेकिन उनकी पदच्युति का अधिकार अकेले राष्ट्रपति को नहीं है। संसद द्वारा प्रस्ताव पारित होने पर ही राष्ट्रपति न्यायाधीशों को हटा सकता है।
2. **पर्याप्त वेतन की व्यवस्था** – न्यायाधीशों के लिए पर्याप्त वेतन एवं अन्य सुविधाओं की व्यवस्था की गई है। उनके कार्यकाल में उनके वेतन–भत्ते कम नहीं किए जा सकते हैं।
3. **पद की सुरक्षा** – संविधान में न्यायाधीशों के पद की सुरक्षा की व्यवस्था की गई है। अवकाश ग्रहण करने की आयु तक वे अपने पद पर कार्य कर सकते हैं। केवल महाभियोग की कठिन प्रक्रिया द्वारा ही उन्हें हटाया जा सकता है।
4. **सेवा निवृत्ति के पश्चात् वकालत पर प्रतिबन्ध** – सेवा निवृत्ति के बाद न्यायाधीश किसी न्यायालय में वकालत नहीं कर सकते हैं।
5. **सम्पूर्ण न्यायिक व्यवस्था पर नियन्त्रण** – सर्वोच्च न्यायालय को अपने तथा अपने अधीनस्थ न्यायालयों की कार्यप्रणाली को निर्धारित करने के लिए नियम बनाने का अधिकार है।
6. **अन्य प्रावधान**– न्यायपालिका को स्वतंत्र बनाने के लिए कुछ अन्य प्रावधान है, न्यायाधीशों को सेवानिवृत्ति के बाद पार्टियों में जाने का निषेध, अदालत की अवमानना करने पर दंडित करने की शक्ति, व्यापक क्षेत्राधिकार और सब से ऊपर, न्यायिक समीक्षा की शक्ति हासिल है।

**30.** भारत के बाह्यरेखा मानचित्र पर, निम्नलिखित को दर्शाइए– 5

1. बांसवाड़ा,
2. मयूराक्षी और फरक्का परियोजना,
3. तिलैया बांध,
4. गांधी सागर बांध,
5. राणा प्रताप सागर बांध,
6. कोनार बांध।

**उत्तर :**

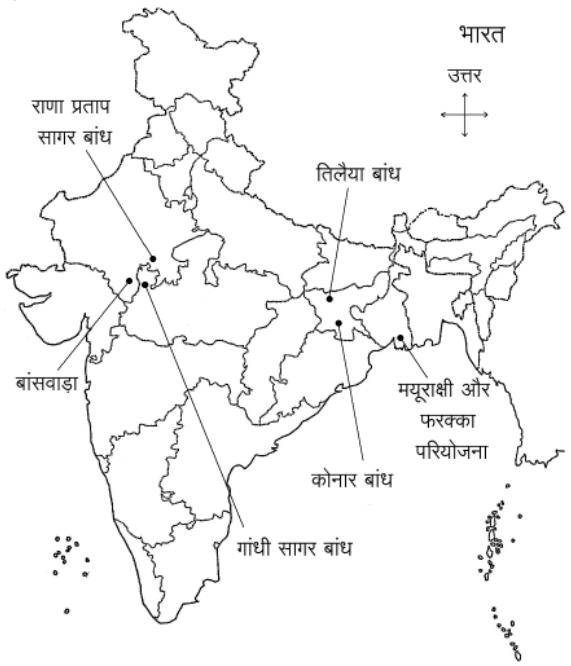


*******

सत्र 2020–21 से नये पाठ्यक्रमानुसार सभी कक्षाओं के सभी विषयों की टेक्स्ट बुक एवं सभी प्रकार की सहायक अध्ययन सामग्री विद्यार्थियों को मोबाइल पर व्हाट्सएप द्वारा एवं वेबसाइट www.rbse.online पर उपलब्ध करवायी जाएगी। इसके लिये विद्यार्थियों से किसी भी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। इसके लिये विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार का कोई OTP Verification या Email द्वारा Verification नहीं देना होगा। हमारा व्हाट्सएप नम्बर जानने या अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिये वेबसाइट www.rbse.online पर विजिट करें।

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाऐंगे।